World Translation

World Translation

E-mail : worltranslation04@gmail.com

Published By : YUGANTAR PRAKASHAN
D-750, Gali No. 4, Ashok Nagar, Shahadara, Delhi-93

World Translation

July-December 2020

Vol-12, Issue-I, July-December 2020

ISSN No : 2278-0408

World Translation

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor in Chief
Prof. Ashok Singh

Dr. Surendra Pandey
(Editor)

Dr. Vikash Kumar
(Editor)

ISSN: 2278-0408

Vol.-12 /Issue-1

July– December : 2020

World Translation

(An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal)

वर्ल्ड ट्रांसलेशन

अन्तर्राष्ट्रीय सान्दर्भिक शोध–पत्रिका

प्रधान सम्पादक

प्रो0 अशोक सिंह

हिन्दी विभाग, कला संकाय,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी

सम्पादक

डॉ0 सुरेन्द्र पाण्डेय

डॉ0 विकास कुमार

Address

C-2, Satendra Kumar Gupta Nagar

Lanka, Varanasi-221005 U.P. (INDIA)

Email-**worldtranslation04@gmail.com**

12.	**मृदुला सिन्हा के कहानियों में आधुनिक सामाजिक जीवन की त्रासदी** **डॉ0 शर्वेश पाण्डेय (एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी विभाग)** **दीपा मद्धेशिया (शोध छात्रा हिंदी)**	**76-83**
13.	**डायबिटीज मेलिटस (मधुमेह) : एक समस्या** **प्रीति राय**	**84-88**
14.	मोदी में संविधानात्मक लोकतन्त्र : विपक्ष में भीड़ात्मक षडयन्त्र भारतीय संविधान : क्षेत्रीय राजनीति **डॉ. रोहताश जमदग्नि**	**89-97**
15.	आचार्य नरेन्द्रदेव का समाजवादी दृष्टिकोण : कृषक समस्या के विशेष सन्दर्भ में **आशीष कुमार सिंह**	**98-102**
16.	नवीन समाज की परिकल्पना और वैतरणी का सच **डॉ. बीना जैन**	**103-110**

ISSN : 2278-0408, Volume: 12/Issue: 01/July-December : 2020

नवीन समाज की परिकल्पना और वैतरणी का सच

डॉ. बीना जैन
एसोसिएट प्रोफेसर
किरोड़ीमल महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

'अलग- अलग वैतरणी' स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ग्रामों में होने वाले परिवर्तन और टूटन को विषय बनाता है। आजादी के बाद देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक विकास के लिए स्पष्ट नीतियां और कार्यक्रम निर्धारित किए गए। भारत क्योंकि कृषि प्रधान देश है और जनसंख्या का एक बड़ा भाग गांव में रहता है अतः नगरों के साथ-साथ ग्रामीण जीवन की दशा सुधारने का विशेष प्रावधान रखा गया। भारत में कृषि की दशा अच्छी नहीं रही है। शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी के कारण खेती उन्नत और आधुनिक तरीकों से होनी असंभव थी जिससे पैदावार भी कम होती थी। गांधीजी ने किसानों की इस दीन-हीन दशा को समझा था और ग्रामीण पुनर्निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया था अतः स्वतंत्रता के पश्चात सर्वप्रथम ग्रामीण पुनर्निर्माण की योजनाएं प्रारंभ की गईं जिसमें सर्वप्रथम कृषि की दशा सुधारने का प्रयास किया गया। 1951 में जमीदारी प्रथा का उन्मूलन किया गया। ग्रामवासियों के जीवन- स्तर को सुधारने के उद्देश्य से स्वतंत्र भारत में अनेक कार्यक्रम, पंचवर्षीय योजनाएं, सामुदायिक विकास योजना, भूमि- सुधार, सहकारिता, लघु उद्योगों की स्थापना आदि प्रतिपादित किए गए। ग्रामीण प्रशासन और संगठन की एक मात्र आधारशिला पंचायतें थीं जिनका पुनर्गठन किया गया। लेकिन आजादी के बाद मूल्यहीनता, स्वार्थपरता, सत्ता- लोलुपता तथा भ्रष्टाचार के बढ़ते जाने के कारण 1960 तक पहुंचते-पहुंचते भारतीय समाज सर्वाधिक अनुशासनहीन, विघटित, स्वार्थी एवं अव्यवस्थित बन गया। भारतीय जनमानस ने जिन आशाओं को पिरोया था वे